

औषधीय पौधों में कायिक प्रवर्धन विकास से औषधीय पादप क्षेत्र में नई पहल



**सुमन सैनी¹, अंकित कुमार
जांगिड़²**

¹सहायक प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष

²सहायक प्रोफेसर, वनस्पति

विज्ञान विभाग,

सेठ ज्ञानीराम बंसीधर पोदार

कॉलेज, नवलगढ़

औषधीय पौधे या उनके उत्तक से पौधे का उत्पादन करने की प्रक्रिया को औषधीय कायिक प्रवर्धन विकास कहा जाता है।

WHO के अनुसार औषधीय पौधे के उत्पादन उद्योग का वैश्विक बाजार मूल्य 2050 में 5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर तक बढ़ है। वर्ष 2000 से 2050 तक उद्योग के लिए वैश्विक बाजार की वृद्धि 7% प्रति वर्ष होने की उम्मीद है।

भारत में औषधीय पौधों की स्थिति-

- 20 कृषि-पारिस्थितिक क्षेत्र।
- 17 मेगा जैव विविधता वाले देशों में से एक।
- विश्व जैव विविधता का 7%।
- 17000 पुष्पिये पौधों की प्रजातियाँ।
- लोक औषधियों में लगभग 9000 औषधीय पौधों की प्रजातियों का उपयोग किया जाता है।
- 1172 प्रजातियाँ व्यापार में हैं जिनमें से 242 प्रजातियाँ ऐसी हैं जिनकी खपत 100 मीट्रिक टन से अधिक है।
- उच्च मांग वाली 40% प्रजातियाँ खेती से प्राप्त होती हैं (कवरेज 0.3 मिलियन हेक्टेयर)

स्वास्थ्य क्षेत्र से औषधीय पौधों की मांग-

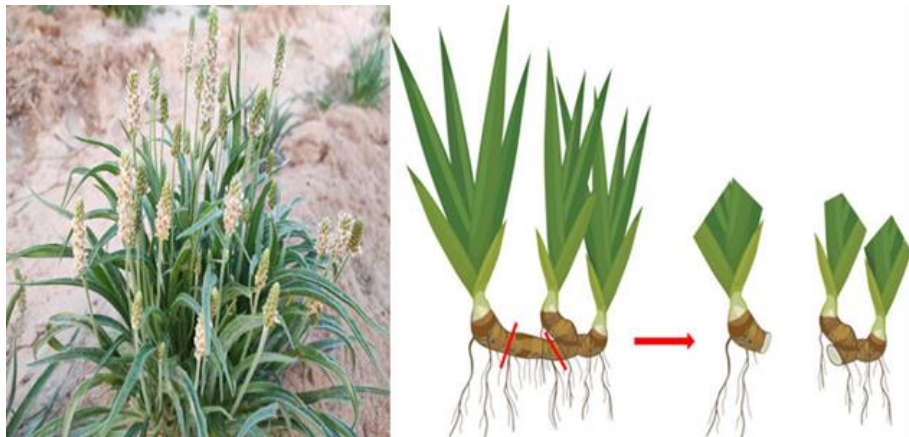
- आयुर्वेद - 1587 प्रजातियाँ
- सिद्ध - 1128 प्रजातियाँ
- यूनानी - 503 प्रजातियाँ
- सोवा-रिग्पा - 253 प्रजातियाँ
- होम्योपैथिक - 468 प्रजातियाँ
- पश्चिमी - 192 प्रजातियाँ

औषधीय पौधों में कायिक प्रवर्धन :-

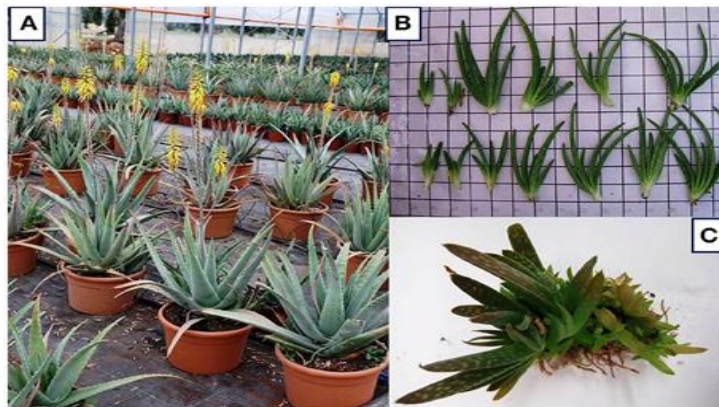
1. गिलोय के बेल में कायिक प्रवर्धन



2. इसबगोल के पौधे में कायिक प्रवर्धन:



3. एलोवेरा (ग्वार पाठा) में कायिक प्रवर्धन:



4. नीम के पौधे में कायिक प्रवर्धन:



5. तुलसी के पौधे में कायिक प्रवर्धन:



6. पीपली के पौधे में कायिक प्रवर्धन:



7. सोना पत्ता पौधे में कायिक प्रवर्धन



प्राकृतिक उपचार:

1. मधुमेह:

मधुमेह सबसे गंभीर, दीर्घकालिक चयापचय संबंधी विकार है और इसकी विशेषता उच्च रक्त शर्करा स्तर है। यह अब एक सामान्य चयापचय रोग है जो असामान्य रूप से उच्च प्लाज्मा ग्लूकोज स्तर की विशेषता है, जो मधुमेह न्यूरोपैथी, रेटिनोपैथी और हृदय रोगों जैसी बड़ी जटिलताओं का कारण बनता है।

प्रयुक्त पौधे - मोमोर्डिका चारेंटिया, सिज़िगियम क्यूमिनी, जिम्मेमा सिल्वेस्ट्रे, ट्राइगोनेला फोनमग्रेकम, टिनोस्पोरा कॉर्डिफोलिया और ओसीमम टेनुइफ्लोरम

2. उच्च रक्तचाप (उच्च रक्तचाप):

एलियम सैटिवम (सामान्य नाम: लहसुन)। लहसुन का उपयोग लंबे समय से विभिन्न प्रकार की हृदय संबंधी स्थितियों, विशेषकर

हाइपरलिपिडिमिया के लिए किया जाता रहा है। इसमें हाइपोटेंसिव एक्शन होने की भी जानकारी दी गई है। ऐसा माना जाता है कि यह नाइट्रिक ऑक्साइड उत्पादन को बढ़ाता है, जिसके परिणामस्वरूप चिकनी मांसपेशियों को आराम मिलता है और वासोडिलेशन होता है।

एपियम ग्रेवोलेंस (परिवार: अपियासी; सामान्य नाम: सेलेरी अजमोडा)।

कैसिया एब्सस (परिवार: कैसलपिनियासी; सामान्य नाम: चाकसू) त्वचा संबंधी विकार

3. मानव त्वचा:

शरीर का बाहरी आवरण, शरीर का सबसे बड़ा अंग है। यह रक्षा की पहली पंक्ति भी है। त्वचा में कई विशिष्ट कोशिकाएँ और संरचनाएँ होती हैं। इसे तीन मुख्य परतों में विभाजित किया गया है। एपिडर्मिस, डर्मिस और

हाइपोडर्मिस। प्रत्येक परत त्वचा के समग्र कार्य में एक विशिष्ट भूमिका प्रदान करती है।

अचिरांथेस एस्पेरा- (सामान्य नाम: कांटेदार फूल, डेविल्स हॉर्सक्लिप अपामार्गा) परंपरागत रूप से, पौधे का उपयोग फोड़े, खुजली और अन्य त्वचा रोगों में किया जाता है।

एलोवेरा - एलोवेरा ने त्वचा रोगों में बहुत अच्छे परिणाम दिखाए हैं और इसे अक्सर स्वास्थ्य पेय के रूप में लिया जाता है। यह झुर्रियों, स्ट्रेच मार्क्स और पिग्मेंटेशन के इलाज में भी प्रभावी पाया गया है। ऐसा लगता है कि यह क्षेत्र के माध्यम से रक्त परिसंचरण में सुधार करके और घाव के आसपास कोशिका मृत्यु को रोककर घाव भरने में तेजी लाने में सक्षम है। जेल में ऐसे गुण होते हैं जो कुछ प्रकार के बैक्टीरिया और कवक के लिए हानिकारक होते हैं